International Research Journal of Human Resource and Social Sciences
ISSN(O): (2349-4085) ISSN(P): (2394-4218)
Impact Factor 6.924 Volume 9, Issue 11, November 2022
Website- www.aarf.asia, Email : editoraarf@gmail.com

बाल साहित्य की परम्परा और विकास

डॉ. सुमन लता,
एसोसिएट प्रोफेसर (हिंदी)
डी.ए.वी. कॉलेज, पिहोवा।

साहित्य समाज का दर्पण होता है और बाल साहित्य बालकों के अन्तर्मन का प्रतिबिम्ब। बाल साहित्य बच्चे के सहज, सरल मन का दर्पण होता है , वहीं बाल गोपाल की अठखेलियाँ , बाल सुलभ चेष्टायें , नटखटपन, कल्पनाशीलता, क्रीड़ायें आदि बाल साहित्य की जान होती हैं। बाल रचनायें पढ़कर बालकों का तदनुरूप भावनात्मक मनोवैज्ञानिक, मानसिक, आत्मिक, संवेदनात्मक उत्कर्ष होता है। बाल साहित्य में चंचलता , सरलता, सरसता की निर्झरिणी प्रवाहित रहती है। बालक उस कच्ची मिट्टी के समान होते हैं , जिन्हें जिस रूप में ढाला जाये वे उस सांचे में ढल जाते हैं। इस दृष्टि से बाल साहित्य अत्यन्त महत्वपूर्ण कहा जा सकता है , जिसमें बालमन और उससे जुड़े समस्त भाव या नवरस जीवंत हो उठते हैं। बाल साहित्य सृजन की परम्परा अत्यन्त प्राचीन रही है। बाल साहित्य में पंचतंत्र की कहानियाँ, हितोपदेश, कथा सारितनागर, अकबर-बीरबल के किस्से , बेताल पच्चीसी आदि प्रमुख हैं। पंचतंत्र की कथाओं में पशु-पक्षियों, वन्य जानवरों को प्रमुख पात्र बनाकर उनके माध्यम से बच्चों को शिक्षाप्रद प्रेरणा दी गई है। बाल साहित्य अर्थात् वह साहित्य जो बालकों के मानसिक स्तर को ध्यान में रखते हुए लिखा गया हो। चंपक , नंदन, चंदामामा जैसी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य की दृष्टि से बालकों को मनोरंजन के साथ सार्थक प्रेरणा व सीख भी प्रदान की है। ये पत्रिकाएँ बच्चों के बीच लोकप्रिय रही हैं। हिन्दी साहित्य में बाल साहित्य की परम्परा अत्यन्त समृद्ध रही है। भक्ति काल में महाकवि सूर के वात्सल्य वर्णन में बाल मनोविज्ञान के विविध चित्र दिखाई देते हैं। तभी तो आचार्य शुक्ल ने कहा है कि 'सूर वात्सल्य का कोना-कोना झांक आये हैं।

डॉ. लक्ष्मी नारायण दुबे- बच्चों की दुनिया सर्वथा पृथक होती है। उनका अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व होता हैं। वे संस्कृति , साहित्य तथा समाज के लिए नए होते हैं। स्कूली साहित्य बाल साहित्य नहीं है। अपितु बच्चों के जीवन तथा मनोभावों को जीवन के सत्य एवं मूल्यों के पहचानने की स्थिति से जोड़कर जो साहित्य उनको सरल एवं उनकी अपनी भाषा में लिखा जाता है और जो बच्चों के मन को भाता है वही बाल साहित्य है। 18

बालकों की प्रिय पत्रिका के चंदामामा के सम्पादक श्री बाल शौरिरेड्डी बाल साहित्य वह है जो बच्चों के पढ़ने योग्य हो रोचक हो , उनकी जिज्ञासा की पूर्ति करने वाला हो उस में बुनियादी तत्वों का चित्रण हो। बच्चों के साहित्य में अनावश्यक वर्णन न हो। कथावस्तु में अनावश्यक पेचीदगी न हो। वह सरल , सहज और समझ में आने वाला हो। सामाजिक दृष्टि से स्वीकृत तथ्यों को प्रतिपादित करने वाला हो।19

लल्ली प्रसाद पाण्डेय के अनुसार बाल साहित्य का उद्देश्य है बालक , बालिकाओं में रूचि लाना , उनमें उच्च भावनाओं को भरना और दुर्गुणों को निकाल कर बाहर करना , उनका जीवन सुखमय बनाना और उनमें हर तरह का सुधार करना ।20

निरंकार देव सेवक- 'बाल साहित्य बच्चों के मनोभावों , जिज्ञासाओं और कल्पनाओं के अनुरूप हो , जो बच्चों का मनोरंजन कर सके और मनोरंजन भी वह जो स्वस्थ और स्वाभाविक हो, जो बच्चों को बड़ों जैसा बनाने के लिए नहीं, अपने अनुसार बनाने में सहायक होने के लिए रचा गया हो21
बाल साहित्य की परम्परा और विकास का अध्ययन निम्न बिन्दुओं के आधार पर करने का प्रयास किया है-

1. आदि युग (प्रारम्भ से 1850 तक)

2.भारतेन्दु युग (1851 से 1900 तक)

3. पूर्व स्वाधीनता युग (1901 से 1947 तक)

4. स्वातंत्र्योत्तर युग (1948 से अब तक)

1 आदि युग (प्रारम्भ से 1850 तक)

बाल साहित्य का इतिहास बहुत प्राचीन और सुसम्पन्न रहा है। भारत में ही सबसे पहले बाल साहित्य उपलब्ध हुआ है। संभव है बाल साहित्य का उद्भव इस पृथ्वी पर बालक के अवतरण के साथ हुआ होगा। जब बालक शिशु के रूप में माँ की गोद में आया होगा तब माता के वात्सल्य रस की भावधारा स्वतः प्रवाहित होने लगी। अपने बालक का लाड लड़ाते समय, सुलाते समय, झुलाते समय माता के द्वारा अनायास ही कुछ ध्वनियाँ तुकबन्दी के रूप में निसृत होकर लोरी, प्रभाती रूप में विकसित हुई होगी। इसी प्रकार पिता के दुलार ने भी कुछ न कुछ रचा होगा। बच्चों को खुश करने और उनकी जिज्ञासा को शांत करने के लिए घर के समाज के बड़े लोगों ने कुछ किस्से कहानियाँ सुनाना शुरू किया होगा। यह सब प्राकृतिक रूप से होता रहा होगा। इसी के साथ-साथ परियों की परिकल्पनायें की जाने लगी होंगी और कहानियाँ बनने लगी होंगी और किसी ने राजा-रानी , राजकुमार - राजकुमारियों के किस्से कुछ सुने होंगे और उनमें कल्पना के रंग भर कर कई रोचक कहानियाँ गड़ी होंगी। राजा-रानी से एक ऐसी पृष्ठभूमि तैयार हुई कि इस पर हजारों किस्से कहानियाँ बनती गई और आज भी किसी न किसी रूप में विद्यमान है। एक था राजा एक थी रानी ये पंक्ति तो कहानी के श्रीगणेश के लिए मिथक ही बन चुकी है। सम्भव है , खेलते-कूदते समय बालकों के मुँह से भी कुछ ऐसे ही स्वर निकल गए होंगे और वो भी तुकबन्दियाँ बन गई होंगी।

इस तरह श्रुति एवं वाचिक परम्परा के द्वारा बाल साहित्य की विकास यात्रा का शुभारम्भ हुआ एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति एक स्थान से दूसरे स्थान एवं एक कालखण्ड से दूसरे कालखण्ड तक की यात्रा करता रहा। इसी के समानान्तर

लोक कथायें लोक विश्वास , लोक परम्परायें, दन्तकथायें, लोकगीत, लोक अनुभव आदि बाल साहित्य की सर्जना में सहायक बनते गए और पीढ़ी दर पीढ़ी बाल साहित्य सुरक्षित रहा और हस्तांतरित होता गया। हिन्दी बाल साहित्य में बहुत से ऐसे साहित्य को भी सम्मिलित किया गया है , जिसके रचियता ज्ञात हैं, जैसे- जगिनक, अमीर खुसरो, सूरदास, लाल बुझक्कड़ आदि । जगिनक के आल्हाखण्ड ' के कुछ भाग बच्चों में बहुत लोकप्रिय हैं अमीर खुसरो (1253 से 1325) की पहेलियों के लिए बहुत प्रसिद्ध हुए हैं। रहे हैं। अमीर खुसरो की पहेलियाँ, कह मुकरनियाँ, ढकोसले आदि में नीति, शिक्षा और मनोरंजन के वे सभी तत्व मिलते हैं , जो बाल साहित्य लिए आवश्यक होते हैं। ये अनुपम पहेलियाँ और कह मुकरनियोंबड़ों के साथ-साथ बच्चों का भी स्वस्थ मनोरंजन करते रहे हैं। एक कह मुकरी-

वह आवे तब शादी होय। उस बिन दूजा और न कोय।।
मीठे लागेंवाके बोल। ऐ सिख साजन? ना सिख ढोल ।

महाकवि सूरदास ने कृष्ण की बाल सुलभ लीलाओं का इतना स्वाभाविक , सहज, लालित्यपूर्ण चित्रण किया है जो हिन्दी साहित्य में बेजोड़ है। इसीलिए वे वात्सल्य रस के सम्राट कहलाते हैं। यद्यपि ये पद बालकों के लिए नहीं लिखे गये थे अपितु श्रीकृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन किया गया था तथापि बच्चों को उन्हें सुनने व पढ़ने में आनन्द आता था-

मैया, मैं नहीं माखन खायो ।

जान परे सब संग सखा मिल मुख दधि लपटायो....... मैया , कबिहैं बढ़ेगी चोटी। किती बेर मोहि दूध पियत मई , है अजहूँ यह छोटी.......

मैया मोहिं दाऊ बहुत खिजाओ । मोसोंकहत मोल को लीन्होंतोहि जसुमति कब जायो ।......

कहा करोंइहि रिस के मारे खेलनहौं नहीं जात

रीतिकाल के कुछ कवियों , वृन्द, रहीम, गिरधर कविराय आदि के साहित्य में भी बाल साहित्य की कुछ विशेषताऐं दृष्टिगत होती हैं। सभी विधाओं की तरह बाल साहित्य का उद्धव भी सर्वप्रथम विकृत की सबसे प्राचीन भाषा संस्कृत में ही हुआ, जैसा कि डॉ. परशुराम शुक्ल मानते हैं कि 'हिन्दी बाल साहित्य की इमारत संस्कृत और लोक कथाओं की नींव पर खड़ी है। लोक कथाओं की प्रमुख विशेषता यह है कि इनका रचनाकार और इनका रचनाकाल दोनों ही अज्ञात होते हैं, अतः इस काल की आरम्भिक सीमा का निर्धारण नहीं किया जा सकता , किन्तु इस काल की विशिष्टताओं के आधार पर इसकी अन्तिम सीमा 1850 निर्धारित की जा सकती है।'

डॉ. देवसरे का मानना है कि हिन्दी बाल साहित्य की पृष्ठभूमि तैयार करने में संस्कृत के बाल साहित्य की जो परम्परा प्रारम्भ चली आ रही थीं, वही आगे चलकर हिन्दी साहित्य में गृहीत हुई। 50

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

विष्णु शर्मा ने पंचतंत्र की रचना की , जो बहुत लोकप्रिय हुई। लगभग 2500 वर्ष पूर्व महिला रोप्य नगर के राजा अमरकीर्ति के चार पुत्र थे जिनका मन पढ़ाई-लिखाई में नहीं लगता था । राजा ने अपने राजकुमारों को चरित्रवान बनाने एवं नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए पंडित विष्णु शर्मा को नियुक्त किया। उन्होंने पशु-पक्षियों तथा जीव-जंतुओं को पात्र बनाकर कहानियों के माध्यम से राजकुमारों को शिक्षित किया। वही कथाएँ पंचतंत्र की कहानियों ' के रूप में संस्कृत भाषा में 'हितोपदेश' के नाम से साहित्य में लिखित रूप से आई। इसी के साथ 'ईसप की कहानियाँ भी बाल साहित्य के रूप से काफी प्रसिद्ध हुई। तत्पश्चात् क्रमानुसार प्राकृत , पाली, अपभ्रंश में बाल साहित्य विकसित हुआ जिनसे हिन्दी बाल साहित्य लेखन को प्रेरणा मिली। इस प्रकार संस्कृत से प्रारम्भ हुई बाल साहित्य की परम्परा हिन्दी ने ग्रहण की। इन्हीं भाषाओं में रचित हितोपदेश , बेताल पच्चीसी , कथा सरित्सागर , पंचतंत्र में बाल साहित्य और प्रमाणिकता के साथ प्रचुरता के साथ उपलब्ध है। पंचतंत्र की कहानियाँ सब से लोकप्रिय हुई। क्या बच्चे और क्या बड़े सबको ये कहानियाँ आज भी बहुत प्रिय हैं। इन पर कई कार्टून फिल्में और धारावाहिक भी बन चुके हैं , जो बहुत पंसदकिये गये हैं, किये जा रहे हैं। इन्हीं के साथ-साथ लाल बुझक्कड़, गोपाल भांड, तेनालीराम के किस्से, शेखचिल्ली की कहानियों और अकबर बीरबल के किस्से आदि ने भी बहुत लोकप्रियता हासिल की।

ध्यातव्य है कि अभी तक का सारा साहित्य सामान्य जन के लिए रचा गया था , बच्चों के लिए अलग से इनमें कुछ नहीं लिखा गया था। इनमें से जो बच्चों जो भाता था, बच्चे उसे अपना लेते थे। पंचतंत्र की कहानियाँ अवश्यमेव बच्चों के लिए लिखी थीं। बाल साहित्य का नामकरण बहुत बाद में हुआ हैं। इस प्रसंग में डॉ. नागेशपाण्डेय , 'संजय के अनुसार प्रारम्भिक बाल साहित्य बड़ों के साहित्य का बालोपयोगी अंश लेश मात्र था। बाल साहित्य की विधायें भी कहानी, पहेली, चुटकलों तक ही सीमित थी रामायण , महाभारत इत्यादि पुरानों के बाल प्रसंग ही बालकों को नाट्य आनन्द प्रदान करते थे। संस्कृत , प्राकृत, पाली, अपभ्रंश के अतिरिक्त हिन्दी की प्रारम्भिक विभाषाओं (अवधी , कन्नौजी, ब्रज, बुंदेली, छत्तीसगढ़ीनिभाड़ी, भोजपुरी और राजस्थानी) और भारतीय भाषाओं असमिया , उड़िया, कन्नड़, कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलगु, पंजाबी, बंगला, मराठी और मलयालम में बाल साहित्य की सर्जना होती रही।

इस संदर्भ में ओम प्रकाश कश्यप ने अपनी आखरमाला में लिखा है- 'अंग्रेजी शिक्षा के प्रभाव और परिवर्तनशील समय की आवश्यकताओं को देखते हुये बच्चों के लिए उपर्युक्त साहित्य की पुस्तकों की आवश्यकता अनुभव की गई तो श्रेष्ठ और मौलिक बाल साहित्य के विकल्प के अभाव में बेताल पच्चीसी कथा सरित्सागर जातक कथा , अलिफ लैला की रचनाओं को भी बालोपयोगी साहित्य में शुमार कर लिया और उनकी कहानियों का संक्षिप्त रूप लिखित और वाचिक परम्परा के माध्यम से बच्चों को पढ़ाया- सुनाया जाता रहा। यह स्थिति हिन्दी में मौलिक बाल साहित्य की दस्तक तक चलती रही। कालान्तर में हिन्दी में मौलिक लेखन का शुभारम्भ हुआ। उसका श्रेय जाता है- मुंशी लल्लूलाल (1763-1835) तथा सदल मिश्र (1767 / 68-1647/48) आदि को वे फोर्टविलियमकॉलेज में हिन्दी की पुस्तकों को बढ़ावा देने केलिए नियुक्त किए गए थे। दोनों में विशेष साहित्यिक प्रतिभा तो न थी , लेकिन संस्कृत, ब्रज भाषा का अच्छा ज्ञान था । उपलब्ध साहित्य के खड़ी बोली में रूपांतरण के साथ नए भाषाई क्षेत्र में आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ाने का उन्होंने जो साहस दिखाया वह उनकी ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित करने के लिए पर्याप्त

है उस समय के साहित्यकारों की समस्या थी कि भाषा का रूप तत्सम हो या आम बोलचाल वाला उर्दू और हिन्दी में साहित्य की भाषा क्या हो, वह भी मसला था। इस बीच बच्चों की शिक्षा के लिए पुस्तकों की आवश्यकता आन पड़ी। इसके लिए हिन्दी लेखकों की आवश्यकता थी, जो बच्चों की युगीन आवश्यकता को पहचान कर पुस्तकें लिख सकें। विलियमकॉलेज के प्रोफेसरग्रिलक्राइस्ट उस योजना के प्रभारी थे। उन्होंने लल्लूलाल और सदल मिश्र को यह जिम्मेदारी सौंपी। लल्लू लाल ने ब्रजभाषा में लिखी कहानियों को उर्दू-हिन्दी गद्य में लिखा , उन्होंने सिंहासन बत्तीसी बेताल पचीसीशंकुतला नाटक', 'माधोनल' आदि पुस्तकें लिखी। इसके अतिरिक्त उन्होंने सन् 1812 में राजनीति नाम से हितोपदेश की कहानियों को भी गद्य में लिखा। इन पुस्तकों के लिखवाने के दो उद्देश्य थे- एक यह कि भाखा की समस्या सुलझाई जा सके और दूसरा यह कि वे पुस्तकें स्कूलों में भी पढ़ाई जायें , जिनसे भाखा का भविष्य निर्मित हो सके और वह अधिक लोकप्रिय हो सके। इन पुस्तकों की भाषा आसानी से समझ में आने वाली होती थी। जिन स्थानों पर अंग्रेजी पढ़ाने के लिए कॉलेज खुल चुके थे, वहाँ भी अंग्रेजी के साथ-साथ हिन्दी पढ़ाई जाने लगी। "

'आदि युग' के बाल साहित्य को दो भागों में बांटा जा सकता है , एक लोक साहित्य और दूसरे भाग में खड़ी बोली के प्रारम्भ में लिखी गई बाल साहित्य की रचनाएँ प्रथम भाग में दादा-दादी , नाना-नानी, पंचतन्त्र, हितोपदेश आदि की कहानियाँ दूसरे भाग में खड़ी बोली में रचित अनुदित और मौलिक साहित्य , जिसमें सदल मिश्र , लल्लूलाल और शिवप्रसाद सिंह सितारे का नाम प्रमुख है। सदल मिश्र ने नासिकेतोपाख्यान का हिन्दी में अनुवाद किया , जिसमें बालोपयोगी तत्व मिलते हैं। शिवप्रसाद सितारे सिंह ने सरकारी नौकरी करते हुए राजाभोज का सपना 'बच्चों का ईनाम बाल बोध', 'वीर सिंह का वृतांत आदि रचनाएँ लिखकर बाल साहित्य के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया। कई रचनाकारों ने अन्य भाषाओं के बाल साहित्य का हिन्दी में अनुवाद किया। इस प्रकार यह युग बाल साहित्य के लिए आरम्भिक उत्कर्ष का रहा। इस समय के बाल साहित्य में लेखकों का उद्देश्य बालकों का नैतिक चारित्रिक एवं सद्गुणों की शिक्षा देना था। जाहिर है कि निरंतर संघर्ष के साथ बाल साहित्य की यात्रा निरंतर गतिशील रही।1.5.2 भारतेन्दु युग (1851 1900 तक)

भारतेन्दुहरिश्चन्द्र आधुनिक हिन्दी साहित्य के जन्मदाता माने जाते हैं। ये एक युग प्रवर्तक रचनाकार थे। इन्होंने हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में सृजन किया और नई दिशा प्रदान की. इसीलिए इस काल को नवजागरण काल या पुनःजागरण काल के नाम से अभिहित किया गया है। यह काल राजनैतिक , सामाजिक, साहित्यिक दृष्टियों से संक्रमण का था। देश पर अंग्रेजी सत्ता का आधिपत्य था। इनकी दमनकारी नीतियों , शोषण और गुलामी से त्रस्त देशवादी पराधीनता के जंजीरों को तोड़ कर आजाद होने के लिए छटपटा रहे थे परतंत्रता के विरुद्ध देश में कई आन्दोलन जारी थे। राजनैतिक दृष्टि से देश घोर संकट से गुजर रहा था।

राजनैतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर दिखाई दे रहा था। देशवासी सदियों की गुलामी के कारण भाग्यवादी बन चुके थे तथा उनका मनोबल टूटता जा रहा था। समाज कई प्रकार के अन्धविश्वासों , कुरीतियों, विसंगतियों जकड़ चुका था। इस काल में अंग्रेजी एवं उर्दू भाषा का वर्चस्व था। ऐसे संक्रमण काल में भारतेन्दुहरिश्चन्द्र का पदार्पण नए सूर्योदय की भांति नई जाग्रति का उजियारा लेकर उदित हुआ। इन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से अंग्रेजी नीतियों का खुलकर विरोध करना प्रारम्भ किया और देशप्रेम का शंखनाद किया। साथ ही अपने समकालीन

साहित्यकारों को भी प्रेरित किया। इसके फलस्वरूप गद्य और पद्य की अनेक विधाओं में साहित्य सृजन प्रारम्भ हुआ और अपनी रचनाओं के द्वारा विदेशी संस्कृति, सभ्यता और भाषा का विरोध करते हुए देश-प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, त्याग, बलिदान, स्वाभिमान की भावना को जगाने का प्रयास आरम्भ हुआ। भारतेन्दु अंग्रेजों के शोषण से त्रस्त जनता को देखकर स्वयं बहुत दुखी थे जिसका जीवंत प्रमाण 1875 ईस्वी में भारत दुर्दशा नाटक में देखा जा सकता है- 'रोअहू सब मिलिकेआवहु भारत भाई। हाहा! भारत दुर्दशा न देखिजाई।"

भारतेन्दुहरिश्चन्द्र ने कुल 238 ग्रन्थों की रचना की , जिनमें से 69 उपलब्ध हैं। इन्होंने प्रौढ़ों , किशोरों एवं बालकों नई दिशा बोध देने वाले प्रेरणात्मक साहित्य सर्जी की। इस युग से हिन्दी बाल साहित्य को एक अलग विधा के रूप में स्वीकार किया जाने लगा। इस विषय में डॉ. देवसरे का कथन - भारतेन्दुहरिश्चन्द्र हिन्दी बाल साहित्य के जन्मदाता के रूप में भले हीं स्वीकार न किये जायें किन्तु इन्हें इसका प्रथम प्रेरक मानना समीचीन होगा। उनकी प्रेरणा से तत्कालीन अन्य लोगों ने भी बाल साहित्य की रचना की। 59

भारतेन्दु की 'अंधेर नगरी चौपट राजा भारत दुर्दशा सत्यवादी हरिश्चन्द्र ', 'नील देवी, 'बादशाह दर्पण 'कश्मीर कुसुम आदि श्रेष्ठ बालोपयोगीनाट्य कृतियाँ हैं। 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' नाटक में सत्य निष्ठा एवं कर्तव्य पालन की भावना को निरूपित किया है, यह नाटक तब से आज तक प्रासंगिक है। भारत दुर्दशा नाट्य कृति इन की कालजयी रचना मानी जा सकती है।यह कृति राष्ट्र प्रेम की उत्कृष्ट भावना से ओतप्रोत है जो तत्कालीन समाज को दिशा निर्देश देने के लिए महत्वपूर्ण साबित हुई। इसके विषय में डॉ. शेषपाल सिंह 'शेष' ने लिखा है- 'सत्यवादी हरिश्चन्द्र नाटक बच्चों में अत्यधिक लोकप्रिय हुआ और आज तक स्कूल-कॉलेजों में मंचित होकर सत्य पर अडिग रहने की प्रेरणा जनमानस को दे रहा है। 60

'नीलदेवी एक गीतात्मक रूपक हैं , इसमें भी स्वाधीनता संग्राम का आह्वान किया गया हैं। भारतेन्दु की ये सभी नाट्य कृतियाँ बालकों के व्यक्तित्व निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण है एवं बाल साहित्य के लिए एक धरोहर है। भारतेन्दु जी को लेखन कला विरासत में मिली थी। इसके पिता गोपालचन्द्र श्रेष्ठ साहित्यकार थे। इन्होंने 'गिरधर कविराय' उपनाम से अनेक लोकोपयोगी, उपदेशात्मक, नीतिपरक जीवन मूल्यों से ओतप्रोत कुण्डलियाँ लिखी हैं जो आज भी प्रासंगिक है, लोक विख्यात है, और बालकों को पाठ्यपुस्तकों में पढ़ाई जा रही हैं। भारतेन्दु राजा शिवप्रसाद सितारे सिंह को अपना गुरु मानते थे। भारतेन्दुहरिश्चन्द्र ने 1882 में बाल दर्पण ' नामक बाल पत्रिका का प्रकाशन करके बाल पत्रिकारिता का शुभारम्भ किया, जो इस युग की महत्वपूर्ण देन कही जा सकती है। इस प्रकार भारतेन्दुहरिश्चन्द्र ही आधुनिक हिन्दी साहित्य के निर्माता माने जाते हैं। यह बात भी प्रमाणिक है कि हिन्दी में बाल साहित्य का इतिहास ठीक उतना ही पुराना है जितना कि स्वयं हिन्दी साहित्य का ।" भारतेन्दु युग हिन्दी साहित्य के लिए विकास युग के साथ-साथ हर दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण रहा है। इस संदर्भ में रचनाकार दिविक रमेश के उद्गार मौलिक कहानियाँभारतेन्दु युग से ही उपलब्ध होनी शुरू हो गई थी। शिव प्रसाद सितारे हिन्द को कुछ विद्वानों ने बाल कहानी के सूत्रपात का श्रेय दिया है। इनकी कहानियाँ हैं- 'राजा भोज का सपना , बच्चों का इनाम लड़कों की कहानी आदि। बाद में सुभद्रा कुमारी चौहान , प्रेमचन्द, राम नरेश त्रिपाठी की कहानियों में हिन्दी बाल साहित्य की परम्परा का समृद्ध रूप मिलता है।'

भारतेन्दु जी की प्रेरणा से तत्कालीन अन्य लेखकों ने भी बाल साहित्य की रचना हेतु अपनी लेखनी उठाई। इस युग के अन्य प्रमुख साहित्यकों में राधाकृष्ण दास (महाराणा प्रताप) , देवीप्रसादमुंसिफ (विद्यार्थी विनोद), अम्बिकादत्त व्यास (कथा कुसुम , कलिका), लक्ष्मीनारायण शर्मा (शिशु मनोरंजन) लाला श्रीनिवास (प्रहलाद चरित) बद्रीनारायण चौधरी, काशीनाथ खत्री , बालकृष्ण भट्ट आदि। राधाकृष्ण दास ने कई नाटक , उपन्यास एवं कविताओं का सृजन किया। इन सब से प्रमुख एतिहासिक नाटक 'महाराणा प्रताप है। काशीनाथ खत्री भी मुख्यतः नाटककार थे , इनकी रचनाओं में देश प्रेम और नैतिक शिक्षा प्रमुख रूप से उल्लेख हुआ है। इन्होंने अंग्रेजी नाटकों का अनुवाद भी किया। बद्री नारायण चौधरी प्रेमधन ने कई काव्यमय रचनाओं का सृजन किया। ये मूलतः कवि थे। इन्होंने सवैया छंद को अपनाया । भारतेन्दु से प्रभावित होकर इन्होंने साहित्य की रचना की। इनके प्रिय विषय प्रकृति , जीव-जंतु शिक्षा मौसम आदि रहे। प्रतापनारायण मिश्र एक प्रतिभा सम्पन्न रचनाकार थे। इन्होंने लगभग पचास पुस्तकों की रचना की। ये प्रमुख रूप से निबन्ध और नाटककार थे। इनकी भाषा सरल , सहज और विनोदपूर्ण होने के कारण इनकी रचनाएँ बच्चों के लिए उपयोगी बन गई। इनकी लिखी प्रार्थना तो इतनी प्रसिद्ध हुई की आज भी बालकों की प्रिय रचना है और इनके लिए कई प्रकार के उपयोगी भी ।

पं. बालकृष्ण भट्ट भारतेन्दु युग के प्रमुख साहित्यकार थे। इन्होंने बड़ी मात्रा में निबन्ध लिखे ओर कुछ नाटकों की भी रचना की। मुहावरों पर आधारित अनेक छोटे-छोटे निबंधों की रचना की जो अत्यंत मनोरंजक और ज्ञानवर्द्धक भी थे। 'शिशुपाल वध', 'नल-दमयंती, शिक्षादान नाटक' अत्यंत लोकप्रिय हुए। ये नाटक बालकों के लिए उपयोगी थी। इस युग में मौलिक सृजन के साथ-साथ अनुवाद का कार्य भी हुआ। इन सभी लेखकों मौलिक ने सृजन के साथ-साथ साहित्य में आये दोषों के परिमार्जन का कार्य भी किया। नवजागृति सामाजिक चेतना , बालकों के चारित्रिक विकास के लिए 'बाल बोधिनी' पत्रिका का प्रकाशन भी किया ।

बाल साहित्यकार हरिकृष्णदेवसरे के अनुसार- भारतेन्दुहरिश्चन्द्र हिन्दी साहित्य की समस्त धाराओं में चेतना फूंकने वाले रचनाकार माने जाते हैं। हिन्दी बाल साहित्य की दिशा में भी भारतेन्दु जी का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। ' 'सत्य हरिश्चन्द्र', 'अंधेर नगरी चौपट राजा ' जैसे नाटकों की रचना की जो बच्चों के लिए भी बड़े ही शिक्षाप्रद और उपयोगी सिद्ध हुए।"

परशुराम शुक्ल 'भारतेंदु युग के आरम्भ में बाल साहित्य अधिकांश उन्ही स्कूली पुस्तकों के रूप में था जिन्हें हिंदी पढने के लिए लिखा गया था। 84 उक्त कथनों के उपरान्त निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है सभी विद्वान और विचारक हिन्दी साहित्य की भान्ति ही बाल साहित्य का विधिवत उद्भव और विकास भारतेन्दु काल से ही स्वीकारते हैं। इसी युग में हिन्दी साहित्य ने अपना परिमार्जित रूप ग्रहण करना प्रारम्भ किया। 1 जनवरी 1874 बाल प्रबोधिनी पत्रिका' का प्रकाशन शुरू हुआ और इसी से बाल साहित्य का सूत्रपात हुआ। लेकिन कुछ इतिहासकार , लेखक इसे बाल पत्रिका नहीं मानते। प्रारम्भिक मौलिक रचना मानते हैं इनकी कुछ बाल कहानियाँ भी इसी श्रेणी में रखी जा सकती हैं।

1.5.3 पूर्व स्वाधीनता युग (1901-1947)

बाल साहित्य को भारतेन्दु युग में अलग विद्या के रूप में स्वीकार किया गया। इसकी विधिवत विकास यात्रा यहाँ से प्रारम्भ होकर द्विवेदी युग में परवान चढ़ने लगी। राजनैतिक दृष्टि से यह युग भी भारतेन्दु युग की भांति अस्थिरता का युग था। स्वाधीनता संग्राम जारी था। अंग्रेजी शासन के दमनचक्र से भारतीय जनता बुरी तरह से आहत थी लेकिन स्वतंत्रता सैनानियों को देशवासियों का सम्पूर्ण समर्थन प्राप्त था। महात्मा गाँधी का अहिंसात्मक आन्दोलन पूरी शिद्दत से जारी था इसी के समानान्तर क्रांतिकारियों की गतिविधियाँ भी अंग्रेजी के लिए सिर दर्द बनी हुईथी। सामाजिक , राजनैतिक, सांस्कृतिक विचलन से देश गुजर रहा था। राजनैतिक जागरण का बीजारोपण हो चुका था। इन सभी गतिविधियों का प्रत्यक्ष प्रभाव साहित्य पर परिलक्षित हो रहा था क्योंकि साहित्य समाज का प्रतिबिम्ब होता है। इसलिये इस युग का साहित्य देश-प्रेम, राष्ट्रीय चेतना, नैतिकता त्याग, बलिदान, स्वाभिमान आदि मूल्यों से अभिप्रेरित रहा।

हिन्दी बाल साहित्य की दृष्टि से यह युग अत्यंत सम्पन्न और महत्वपूर्ण रहा। पहली बार मौलिक बाल साहित्य का सृजन प्रारम्भ हुआ। इस विषय में अखिलेश श्रीवास्तव चमन का कथ्य- हिन्दी बाल साहित्य में मौलिक , सामाजिक तथा उद्देश्यपूर्ण लेखन की विधिवत शुरूआत बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक से देखने को मिलती है। जब 'विद्यार्थी, शिशु' तथा 'बाल सखा' जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन प्रारम्भ हुआ। "

इस युग की सबसे देन है आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का पदार्पण। इनके आगमन से हिन्दी साहित्य के इतिहास में युगांतकारी परिवर्तन परिलक्षित हुआ। 1903 में द्विवेदी के तत्वावधान में 'सरस्वती पत्रिका के सम्पादन से नए युग का सूत्रपात हुआ। महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य के रचनात्मक सुधार के लिए स्वयं को पूरी तरह समर्पित कर दिया। इस युग में बाल साहित्य के लिए भी उल्लेखनीय कार्य किया। सरस्वती पत्रिका में बालोपयोगी रचनाओं को स्थान दिया जाने लगा। वर्तमान बाल साहित्य की आधारशिला इसी युग की देन है। आचार्य द्विवेदी हिन्दी भाषा के रचनात्मक तात्विक परिमार्जन के लिए सम्पूर्णता से समर्पित हो गए। इस युग में पहली बार बालकों के मनोरंजन के लिए पाठ्येतर पुस्तकों की रचना की जाने लगी। आवश्यकतानुसार कई पुस्तकें अलग से भी लिखवाई गई। इस काल के अनेक साहित्यकारों ने स्वतः स्फूर्त होकर मौलिक बाल साहित्य को अपने रचनाकर्म में महत्वपूर्ण स्थान दिया। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने कई बालोपयोगीसंस्मरणों की रचना की , जिन्होंने बालकों को भारतीय संस्कृति से परिचित करवाने में प्रमुख भूमिका निभाई।

डॉ. हरिकृष्णदेवसरे लिखते हैं कि द्विवेदी युग में पहुँच पर बाल साहित्य की धारा को काफी विस्तार मिला। यह ऐसा समय था जबकि खड़ी बोली का साफ-सुथरा रूप सामने आने लगा था। सम्पादकाचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी की प्रेरणा से अलेक लेखकों को जन्म मिला। द्विवेदी जी ने व्याकरण की शुद्धता और भाषा की सफाई पर विशेष बल दिया। इन्होंने बच्चों के ज्ञानवर्द्धन तथा मनोरंजन के लिए सरल , सुबोध शैली में बच्चों के लिए स्वयं लेख लिखे और अन्य लेखकों से भी लिखवाए। इसी समय शिशु (1915) और 'बालसखा (1917) के प्रकाशन ने बालसाहित्य की समृद्धि में बड़ा योगदान दिया। पं. सुदर्शनाचार्य की प्रेरणा से शिशु और द्विवेदी जी की प्रेरणा से 'बाल सखा' में अनेक लेखकों ने

बालकों के लिए सरल और पठनीय सामग्री प्रस्तुत की। इंडियन प्रेस से छोटी-छोटी कहानियों की पुस्तकें भी सीरीज में प्रकाशित की गई। पं. बद्रीनाथ भट्ट , सुदर्शनाचार्य, गिरिजादत्त शुक्ल 'गिरीश' आदि लेखकों ने बालसाहित्यकोप्रगतिशील बनाने में अपना पूरा योग दिया। इनकी पुस्तकें छात्रहितकारीपुस्तकमाला , इंडियन प्रेस और ओंकार प्रेस से प्रकाशित भी हुई। हाँ, इस युग की पुस्तकों की एक विशेषता यह थी कि वे स्कूली पुस्तकों से अलग थी। उनके विषय प्रतिपादन का ढंग और दृष्टिकोण सभी भिन्न थे । तात्पर्य यह है कि शुद्ध और मौलिक बालसाहित्य की रचना द्विवेदी युग से ही आरम्भ हुई।"

द्विवेदी युग को बाल साहित्य की दृष्टि से स्वर्णिम युग कहा जा सकता है। इस समय अनेक विधाओं- कहानी , कविता, नाटक, गीत आदि में विभिन्न विषयों पर रचनाकर्म किया गया जो बालकों के लिए मनोरंजन , धर्म और नीति से भरपूर था, साथ ही भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों का ज्ञान देने वाला था। अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' भी बहुत पहले से बालकों के लिए रचनाएँ लिख रहे थे , सत्यनारायण कविरत्न बालमुकुन्द गुप्त ने भी कई बालोपयोगी साहित्य का सृजन किया। बाबू मैथिलीशरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सनेही ने बालकों के लिए बहुत सरस गीत लिखे। रघुनंदन प्रसाद त्रिपाठी रघु ने सुन्दर शिश गीतों की सर्जना करके बाल साहित्य में महत्वपूर्ण योगदान किया। इनके गीत तत्कालीन पत्रिकाओं में प्रकाशित हुये। इस काल तक एकल परिवार हुआ करते थे और मानवीय रिश्ते सघन थे , प्राकृतिक वैभव भरा-पूरा था। अतः बाल रचनाओं में इनकी स्पष्ट झलक देखने को मिलती है। एक और बात महत्त्वपूर्ण रही कि पं. श्रीधर पाठक, बाल मुकुंद गुप्त और अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' की तिकड़ी ने एक से एक श्रेष्ठ बाल रचनाओं की रचना करके बाल साहित्य अतुलित सम्बल प्रदान किया । श्रीधर पाठक की सुविख्यात बाल कविता जिसे बाल सुलभ भाषा में रचकर बाल कविता को नई

दिशा प्रदान की और भाषाई प्रयोग से चटकार उत्पन्न कर दिखाया- बाबा आज देलछे आए , चिज्जी-पिज्जी कुछ ना लाए, बाबा क्यों नहीं चिज्जी लाए, इतनी देली से क्यूँ आए कां है मेला बला खिलौना , कलाकंद लड्डू का दोना, चां-चां गाने वाली चिलिया, चें-चें करने वाली गुलिया, बाबा तुम और का से आए. आंआंचिज्जी क्यों न लाए।'

इसी समय पं. सुदर्शनाचार्य ने 1916 में शिशु ' नामक बाल पत्रिका निकाल कर बाल साहित्यकारों के लिए नया मार्ग प्रशस्त किया और स्वयं ने भी श्रेष्ठ बाल कवितायें लिखीं। सन्1880 के बाद बाल साहित्य और समृद्ध होने लगा। मन्ननद्विवेदी, प्रेमचंद, माखनलालचतुर्वेदी आदि मूर्धन्य साहित्यकारों ने बाल साहित्य को नई ऊँचाईयाँ दी। हिन्दी बाल साहित्य के प्रमुख बालगीतकार कवियों में पं. श्रीधर पाठक , बालमुकुन्द गुप्त , सुखराम चौबे गुणाकर लगभग समकालीन थे। इनमें से श्रीधर पाठक और बालमुकुन्द गुप्त ने सबसे पहले एक ही समय में बच्चों के लिए भी कवितायें लिखना प्रारम्भ कर दिया था पर बालमुकुन्द गुप्त एक पत्रकार के रूप में अधिक विख्यात थे।

पद्य के साथ गद्य भी द्विवेदी युग में प्रचुरता से सृजित किया गया। उपन्यास सम्राट मुंशी प्रेमचंद, सुदर्शन, जहूरबख्श जैसे प्रख्यात लेखकों ने बालकों के लिए भी बहुत सुंदर कथा साहित्य लिखा। प्रेमचन्द की बालोपयोगीकहानियों में 'ईदगाह 'गिल्ली-डंडा', 'आत्माराम', 'बूढ़ी काकी' 'बड़े भाई साहब आदि कहानियाँ बाल साहित्य के लिए कालजयी रचनाएँ बन गई। ईदगाह तो आज भी पाठ्य पुस्तकों में पढाई जा रही है। इन कई कहानियों के पात्र बालक और किशोर हैं। ये

कहानियोंतत्कालीन मासिक पत्रों में प्रकाशित होती रहीं। इसी क्रम में श्रीराम शर्मा की 'शिकार' भागीरथ प्रसाद दीक्षित की सियार पांडे उल्लेखनीय पुस्तकें हैं जो रेखांकित करने योग्य हैं। प्रसिद्ध निबन्धकार बाबू गुलाबराय ने बच्चों के लिए छोटी-छोटी सरस कहानियों की रचना की। रामनरेश त्रिपाठी की बाल कहानियाँ भी इस युग की उल्लेखनीय रचनाएँ हैं। जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद का प्रताप प्रतिज्ञा , कैलासनाथभटनागर का 'भीम प्रतिज्ञा', चतुरसेन शास्त्री का अमरसिंहराठौर नाटक बच्चों की पसंद बने और उनके द्वारा सफल अभिनीत भी किये। राष्ट्रकविरामधारी सिंह दिनकर जैसे मूर्धन्य रचनाकार ने सरस बालगीतों की इस रचना करके बालसाहित्य को समृद्ध किया। इस युग के बाल साहित्य में नैतिक शिक्षा के साथ बालकों का भरपूर मनोरंजन करने का भी पूरा प्रयास इन रचनाकारों का रहा।

बाल पत्रकारिता की दृष्टि से द्विवेदी युग अत्यंत समृद्ध रहा , बाल साहित्य की स्वतंत्र विधा के प्रारम्भ का श्रेय द्विवेदी युग को ही मिला। 'सरस्वती' के प्रकाशन के साथ ही प्रकाशन का क्रम निरंतर होता गया और बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन का क्रम निरंतर जारी रहा। सन् 1917 में प्रथम पत्रिका बालसखा का प्रकाशन हुआ। इस समय जब बड़े-बड़े साहित्यकार बड़ी संख्या में बालोपयोगी रचनाओं का सृजन कर रहे थे वहीं बालोपयोगी पत्रकारिता भी हो रही थी। लखनऊ से 'बाल हितकर प्रकाशित हो रहा था। यह मासिक बाल पत्रिका थी। 1906 में अलीगढ़ में छात्र हितैषी पत्रिका का प्रकाशन हुआ। इसमें बालकों और छात्रों ने ज्ञान संवर्धन के साथ नैतिक विकास सम्बन्धी विषयवस्तु भी होती थी। बनारस से बाल प्रभाकर नरसिंहपुर से 'मॉनीटर', मालवा से 'बाल मनोरंजन पत्रिकाएँ प्रारम्भ इन बाल पत्रिकाओं ने बाल मनोरंजन एवं बालकों के व्यक्तिव निर्माण की दिशा में अच्छा कार्य किया , किन्तु ये पत्रिकाएँ दीर्घावधि तक संचालित नहीं रह सकीं।बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन में सन् 1910 में इलाहाबाद से प्रकाशित विद्यार्थी ने बाल पत्रकारिता को और ऊँचाइयाँ प्रदान की। इस में बालकों और किशोरों के लिए मनोरंजक और ज्ञान बढ़ाने वाली सामग्री का प्रकाशन होता था। इसी क्रम में सुदर्शनाचार्य के संपादन के 1915 में 'शिशु' पत्रिका प्रकाशित हुई। इसमें मौलिकता होने से बाल साहित्य को नई दृष्टि मिली। इस पंक्ति को आगे बढ़ते हुए 1920 में 'सहोदर मातादीन के सम्पादन में आई , 1924 में वीर बालक , 1926 में 'बालक' जिस का सम्पादनरामजीलाल शर्मा ने किया। 1927 में खिलौना प्रकाशित हुई। इस काल की कुमार', 'चमचम', 'वानर 'तितली' आदि अनेक पत्रिकाएँ भी प्रकाश में आई। इन सभी पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को समृद्ध और पुष्ट किया।

उपर्युक्त सभी पत्रिकाओं में 'बाल सखा' को सर्वाधिक प्रतिष्ठा मिली और सब से लम्बी यात्रा भी इसी ने तय की , यह बालोपयोगी पत्रिका 53 वर्षों तक लगातार प्रकाशित हुई। इस पत्रिका ने नए कीर्तिमान स्थापित किये , नए-नए बाल साहित्यकारों की नई कतार को जन्म दिया। इन सभी बाल पत्रिकाओं ने बाल साहित्य को लोकप्रिय बनाने एवं लोक तक बाल साहित्य को पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया। इसके परिणाम स्वरूप बड़े-बड़े साहित्यकारों का ध्यान इस ओर जाने लगा। राष्ट्रकविरामधारी सिंह 'दिनकर' की प्रथम कविता 1924 में छात्र सहोदर में प्रकाशित हुई। बाल पत्रकारिता की दृष्टि से द्विवेदी युग सदा स्मरणीय रहेगा। उन्नीसवीं शताब्दी में वैज्ञानिक अविष्कार प्रारम्भ हो चुके थे। ज्ञान-विज्ञान, यांत्रिकी, संचार, उद्योग, तकनीकि आदि क्षेत्रों में संचेतना का सूत्रपात हुआ। बाल साहित्य पर इनका प्रभाव पड़ने लगा और विज्ञान , तकनीक, यांत्रिकी आदि विषयों पर बाल रचनाएँ लिखी जाने लगीं। वैज्ञानिकों की जीवनियाँ भी लिखी गई। बालमनोविज्ञान के ज्ञाता आचार्य रामलोचन शरण ने गणित , विज्ञान, इतिहास जैसे

विषयों पर सरल एवं सरस भाषा में बाल साहित्य की रचना की। अम्बिकादत्त व्यास ने विज्ञान आधारित 'आश्चर्य वृतांत' उपन्यास लिखा।

इस युग में बाल साहित्यकारों की संख्या में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। हिन्दी साहित्य के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अंकित होने वाले लगभग सभी मूर्धन्य साहित्यकार इसी युग की देन है। इस युग के प्रमुख रचनाकारों में महावीर प्रसाद द्विवेदी के अतिरिक्त श्रीधर पाठक , बालमुकुन्द गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' मैथिलीशरण गुप्त, कामता प्रसाद गुरु, रामजीलाल शर्मा, मन्ननद्विवेदी'गजपुरी, सुदर्शनाचार्य, रामनरेश त्रिपाठी, विद्याभूषणविभुमुरारी लाल शर्मा, बाल बंधु स्वर्ण सहोदय श्रीनाथ सिंह , जहूर बख्श , रामवृक्षबेनीपुरी, सोहनलालद्विवेदी, रमापति शुक्ल माखनलालचतुर्वेदी , भगवती प्रसाद वाजपेयी, प्रेमचन्द, सुभद्रा कुमारी चौहान, कन्हैया लाल मत्त, रामेश्वर दयाल दुबे, रामधारी सिंह दिनकर श्यामनारायण कपूर, सुखराम चौबे गुणाकर, गिरिजादत्त शुक्ल गिरीश ठाकुर श्रीनाथ सिंह , गोपालशरण सिंह, देवीदत्त शुक्ल, रामचन्द्र रघुनाथ, केशव प्रसाद पाठक , डॉ. सुधीन्द्र, राम सिंहासन सहाय मधुर , रामलोचन शरण ,गौरीशंकर लहरी, कुंजबिहारी लाल चौबे , सुमित्रानंदन पंत, देवी दयाल चतुर्वेदी , पूरनचंद श्रीवास्तव, रामकुमार वर्मा, रघुनंदन प्रसाद त्रिपाठी, 'रघु', शम्भूदयाल सक्सेना, चन्द्रमौलि शुक्ल, लल्ली प्रसाद पाण्डेयमूलचन्द्र, राजेश्वर प्रसाद गुरू, रामेश्वर प्रसाद गुरू , दौलत सिंह लोढा 'अरविन्द', रानी लक्ष्मीकुमारीचूड़ावत , नानूरामसंस्कर्ता, डॉ. कन्हैया लाल सहल , नारायणदत्तश्रीमाली, दाऊदयाल, जगदीश माथुर , कल्याणसिंहराजावत, शक्तिसिंहकविया, गिरिधारीलाल परिहार , मोहन मंडेला , ब्रजमोहन सपूत , लक्ष्मणसिंहरसवत, किशोर कल्पनाकांत , गणपतिचन्द्रभण्डारी, बंशीलाल बेकारी , मुरलीधर व्यास , प्रतापनारायण पुरोहित आदि। यहाँ कुछ कालजयी रचनाकारों की किंचित कृतियों का उल्लेख प्रासंगिक है।

श्रीधर पाठक जोंधरी आगरा बाल भूगोल, भारतगीत, मनोविनोद, पं. महावीर प्रसाद द्विवेदी, 'बालविनोद, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', 'बाल विभव , बाल विलास , फूल पत्ते , चन्द्र खिलौना , खेल-तमाशा', उपदेश कुसुम बाल गीतावली, चाँद सितारे , पद्य-प्रसून, बाल मुकुंद गुप्त खेल तमाशा , खिलौना, कामता प्रसाद गुरु , सुदर्शन, पदम पुष्पावली, दामोदर सहाय कविकिंकर: 'रसाल, 'अंगूर, सुधा सरोवर सरल सितारी बाल सितारी उल्लेखनीय है ।

प्रेमचन्द : कुत्ते की कहानी'नमक का दारोगा ईदगाह मैथिलीशरणगुप्तः'यशोधरा', स्फुट बाल कवितायें, विद्या भूषण विभु चार साथी 'बबुआ' पंख शंख, देवीप्रसाद गुप्त 'कुसुमाकर, मुरारी लाल शर्मा 'बंधु', 'बच्चे होनहार बिरवे गोदी भरे लाल, 'ज्ञान गंगा', 4 'कोकिला, रामनरेश त्रिपाठी 'हंसू की हिम्मत मोहन माला मोहन भोग ', 'वानर संगीत', कविता विनोद, मोतीचूर के लड्डू गोपालशरण सिंह , भूपनारायण दीक्षित खण्ड-खण्ड देव , 'गधे की कहानी ', 'नटखट पाण्डे , नया आल्हा', 'बाल राज्य', 'साहसी कौआ ।

शम्भूदयाल सक्सेना : पालना ', 'लोरी और प्रभाती , मधु लोरी', 'फूलों के गीत', 'चन्द्र लोरी' शिशु लोरी, रेशम झूला', 'आरी निंदिया', 'नाचो गाओ', 'बाल कवितावली ठाकुर: श्रीनाथ सिंह : 'गुब्बारा', 'बाल भारती, दोनों भाई', 'पिपहरी, मीठी तानें, लम्बा-चौड़ा', 'खेल घर', 'स्वर्ण सहोदय', 'चगन मगन, ललकार 'लाल फाग', 'बाल खिलौना, नटखट हम', 'बाल वीर बालक', 'बादल', 'शतमन्यु', 'वीर हकीकत राय, बच्चे के गीत- भाग-4 सुभद्रा कुमारी चौहान'कोयल', सभा

का खेल, सोहन लाल द्विवेदी, दूध बताशा, शिशु भारती, बिगुल, बाल भारती', 'बांसुरी, 'हंसो - हँसाओ', 'शिशु गीत', 'बच्चों के बापू', 'गौरव गीत', 'हम बलवीर बाल सिपाही , 'उठो उठो', 'गीत भारती रमापति शुक्ल , अंगूरों का गुच्छा हुआ सवेरा शैशव बच्चों के . भावगीत , रामेश्वर दयाल चलो चलो , डाल-डाल के पंछी , कूझडकूं', 'फूल और कांटे', 'धरती के लाल, रामधारी सिंह दिनकर धूप छाँह मिर्च का मजा सूरज का ब्याह ।कन्हैया लाल मत्त: लोरियों और बाल गीत अब है मेरी बारी बोल मेरी मछली कितना पानी , रजत पालना, खेल तमाशे 'आटे बाटे सैर सपाटे, आरसी प्रसाद सिंह चंदा मामा ', 'चित्रों में लोरियाँ ', 'ओनामासी'जादू की बंसी 'कागज की नाव ', 'बाल गोपाल', 'हीरामोती', 'राम कथा', भवानी प्रसाद मिश्र 'तुकों के खेल , शकुंतलासिरोठिया'चटकीले फूल', 'नन्ही चिड़िया', 'सोन चिरैया', 'आ रीनिंदिया', 'काले मेघा पानी दे ', 'बाल गीत अमृतलाल नागर (उपन्यास) बजरंगी पहलवान बजरंगी नौरंगी बजरंगी स्मगलरों के फंदे में अक्ल बड़ी या भैंस (नाटक) 'पानी देश की सैर ', 'बाल दिवस की रेल ' (अन्य) 'बाल महाभारत' (कहानियाँ) "सात पूँछो वाला चीकू , लिटिलरेडइजिप्शिया'अमृतलाल नागर बैंक लिमिटेड , द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी काटो और गाओ , बढ़े चलो', 'माखन मिश्री', 'हाथी घोड़ा पालकी निरंकार देव सेवक मुन्ना के गीत ', 'धूप छाया', 'चाचा नेहरू के गीत दूध जलेबी माखन मिसरी , "रिमझिम", 'फूलों के गीत 'मटर के दाने 'महापुरूषों के गीत शेखर के बाल गीत, पप्पू + बालगीत, बिल्ली के गीत आज़ादी के गीत, टेसू के गीत आदि । के

उपरांकित अवलोकन के फलस्वरूप कहा जा सकता है कि स्वाधीनता पूर्व का बाल साहित्य के अध्येताओं का हर दृष्टि से बाल साहित्य के उत्कर्ष में अविस्मरणीय , अतुलित अवदान रेखांकित करने योग्य है। बाल पत्रिकाओं ने इस संदर्भ में सोने में सुगंध का कार्य किया। एक से बढ़कर एक बाल पत्रिकाएँ इस युग की बहुत बड़ी देन है।

1.5.4 स्वातंत्र्योत्तर युग (सन् 1948 से अनवरत)

स्वतंत्रता प्राप्ति के साथ भारत में नए भास्कर का उदय हुआ और नई स्फूर्ति, नई संचेतना, नई गति की रश्मियों ने देश के कण-कण को आलोकित कर दिया। सदियों की पराधीनता के पश्चात् देशवासियों ने खुली हवा में साँस ली। राजनैतिक आजादी के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक क्षेत्रों में नए-नए आयामों की स्थापना हुई। विज्ञान और तकनीकी धरातल पर नवीन क्रांति का सूत्रपात हुआ। इस काल में साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। नवीन अवधारणायें नए विचार, नया चिंतन नए स्वर साहित्य सृजन में मुखरित होने लगे। इन सबके फलस्वरूप बाल साहित्य के स्वरूप में तीव्रता के साथ परिवर्तन परिलक्षित होने लगा। अभी-अभी देश स्वतंत्र हुआ था , अतः स्वाधीनता सैनानियों, राष्ट्रनायकों, महापुरुषों के त्याग बलिदान का प्रभाव बाल साहित्य पर भी पड़ा और राष्ट्रीय चेतना के स्वर गूंजने लगे। आजादी के पांचवे, छठे दशक में बाल साहित्य में उल्लेखनीय प्रगति हुई। बालकों के • रुचियों के अनुरूप रोचक, मनोरंजक, सरस साहित्य में रचा जाने लगा ।

बालक कल्पनालोक से इतर बदलते परिवेश , जीवन मूल्यों , सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक स्थितियों के यथार्थ धरातल से परिचित हुआ। इसी समय निरंकार देव सेवक ने बालसाहित्य में आलोचना की परम्परा को आरम्भ किया। इस अवधि में बाल साहित्य को निरंकार देव सेवक, स्वर्ण सहोदय, डॉ. विद्याभूषणविभूसोहन लाल गुप्त जैसे सुस्थापित

बाल साहित्यकारों ने मनोरंजन , बाल मनोविज्ञान, बाल सुलभता, सरसता पर बल देते हुए बाल साहित्य को नई ऊँचाईयाँ प्रदान कीं।

स्वातंत्र्योत्तर काल के संदर्भ में डॉ. नागेश पांडेय के विचार यहाँ प्रासंगिक है- 'स्वतन्त्रता के पश्चात् बाल साहित्य के क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई। इसके कई कारण थे- एक प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलालनेहरू को बच्चों से विशेष प्रेम था। मासिक पत्रिका बाल भारती और संस्था 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट उन्हीं की सदमानसिकता का प्रतिफल है। 'चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट' की स्थापना हेतु पं. नेहरू ने 50 लाख रूपये का ऋण स्वीकृत किया था। दूसरा- स्वातन्त्र्य-पूर्व कालीन पत्रिकाओं, विशेषतः बाल सखा ने बाल साहित्य लेखकों का एक अलग ही वर्ग तैयार कर दिया था। बाल भारती , पराग, नंदन जैसी पत्रिकाओं ने इस वर्ग को एक मंच प्रदान कर सार्थक सृजन हेतु विशेष प्रोत्साहित किया। तीसरा - बालकों के संदर्भ में मनोवैज्ञानिक चिंतन के फलस्वरूप बाल साहित्य की पुस्तकों की आवश्यकता अनुभव किये जाने से प्रकाशकों की संख्या में भी खासी वृद्धि हुई। चार बाल साहित्य की आवश्यकता तथा शास्त्रीय पक्ष पर चर्चा प्रारम्भ होने से विश्वविद्यालयों ने भी इसे शोध विषय के रूप में मान्यता प्रदान की। इसी प्रकार बाल साहित्य , बाल साहित्यकारों के महत्व को अनुभव करते हुए अनेकानेक संस्थाओं की स्थापना तथा पुरस्कारों का प्रवर्तन भी इसी युग की देन है। स्वातंत्र्योतर बाल साहित्य लेखकों की विविध विधाओं की लाखों रचनाएँ पत्र पत्रिकाओं में बिखरी पड़ी है। आकर्षक साज-सज्जा के साथ हजारों पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 7

बाल साहित्य के विकास के लिए स्वातंत्र्योत्तर काल बहुत महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ । यह भी माना जाने लगा कि बच्चा अपना अलग अस्तित्व रखता है और उसके लिए अलग किस्म के साहित्य की जरूरत है। इस समय नवीन विचारधाराओं का जन्म होने से साहित्य का स्वर धीरे-धीरे बदलने लगा। बाल साहित्य की धूम मच जाने से लगभग सभी विधाओं की पुस्तकें प्रकाशित करना प्रारम्भ किया। उस समय विषयगत रूप से बाल साहित्य अत्यंत समृद्ध हुआ । पौराणिक और लोकथाओं, राजा-रानी एवं परी कथाओं से इतर नए-नए विषयों का समावेश हुआ। बाल रचनाओं में राष्ट्र भक्ति, देश-प्रेम, प्रकृति, परिवेश, दैनिक जीवन, नवीन भावबोध, मानवीय मूल्यों के स्वर मुखरित हुए। प्रस्तुत संदर्भ में डॉ. परशुराम शुक्ल ने लिखा है- भारत की आजादी के बाद यहाँ की सामाजिक , आर्थिक, राजनैतिक सभी परिस्थितियों में तेजी से परिवर्तन आरम्भ हुआ। जिससे समाज के सभी वर्गों में चेतना और जागरूकता बड़ी । नई शिक्षा नीति बनी, शिक्षण संस्थाएं खुली, जिससे शिक्षितों का प्रतिशत बढ़ा। इन सबका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा। भारत की स्वतंत्रता के बाद बाल साहित्य की सीमायें टूटी तथा इसमें अनेक विषयों और विचारधाराओं का समावेश हुआ। इससे भाषा में भी कुछ सुधार आया। इस युग के पूर्वार्द्ध में नेहरू , गाँधी, सुभाष, भगतसिंह आदि नेताओं और क्रांतिकारियों पर प्रचुर मात्रा में साहित्य लिखा गया। इसके साथ ही स्वतंत्रता का महत्त्व, कर्तव्यपरायणता, मानवता का महत्व, पर्वों त्यौहारों का महत्व तथा पशु-पक्षियों का महत्व दर्शाने वाला बाल साहित्य भी लिखा गया। इसके बाद बाल मनोरंजन और विज्ञान की रचनाएँ प्रकाश में आई तथा बाल उपन्यासों का सृजन आरम्भ हुआ , इनमें कुछ वैज्ञानिक उपन्यास भी थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी बाल साहित्य में नित नई ऊँचाईयाँ छूने लगा। जिन लेखकों , कवियों और प्रकाशकों ने बच्चों की मनोवृत्ति के अनुकूल सरस और सीधी-साधी भाषा में रोचक ढंग से विषय-वस्तु को प्रस्तुत कर पुस्तकों की

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)

रचना की हैं , उनका कार्य प्रशंसनीय है। स्वतंत्रता के बाद लिखा गया। अधिकांश बाल साहित्य बच्चों की बौद्धिक क्षुधा के लिए पौष्टिक सिद्ध हुआ है।

स्वातंत्र्योत्तर काल में बाल साहित्य रचना का विकास संतोषप्रद रहा। इस अवधि में गद्य विधाओं के रूप में बाल साहित्य का पर्याप्त विकास हुआ। कहानी , उपन्यास, नाटक, निबन्ध तथा जीवनी आदि विधाओं में स्तरीय बाल साहित्य लिखा गया। इस दौर के बाल साहित्य में उपदेशात्मकता का भाव पाया जाता है क्योंकि बालकों और युवाओं को चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों की प्रेरणा देने के लिए लिखी गई रचनाओं में उपदेशात्मकता का भाव आ जाना स्वाभाविक है। इस समय के बाल साहित्य की प्रमुख विशेषता मनोरंजन की प्रवृत्ति है 69

उपरांकित संदर्भों से स्पष्ट है कि स्वातंत्र्योत्तर काल में बाल साहित्यकारों ने बच्चों , किशोरों के चारित्रिक, नैतिक एवं उनके समग्र व्यक्तित्व विकास को ध्यान में रखकर सृजन कार्य किया। बाल साहित्य में कई नई विधाओं को अपनाया गया जैसे बालोपयोगी गीत, कविता, निबन्ध जीवनी आदि बाल रचनाकारों ने मनोरंजन का पूरा ध्यान रखते हुए सरल , सरस, बाल मनोवृत्ति के अनुकूल भाषा और शिल्प को अपनाया गया। स्वातंत्र्योत्तर काल के उतरार्द्ध में बाल गीतकारों ने अत्यंत सरस , अभिराम सुमधुर गीतों की रचना की। इस अवधि के गीत और कविता में सौन्दर्य बोध , उपमान, प्रतिमान, भावबोध, अर्थबोध, शिल्प के क्षेत्र में नवीन स्वर मुखरित हुए। ये गीत बालकों के मनोभावों के अनुकूल प्रस्तुत किये गये , जिन्हें पढ़कर बच्चे आह्लादित होते हैं। इस अवधि में शिशु - गीतों का प्रणयन विशिष्टता के साथ हुआ। श्रीधर पाठक , स्वर्ण सहोदय , हरिऔध, श्रीनाथ सिंह गुणाकर आदि गीतकारों ने रससिक्त रोचक , सुमधुर बोधगम्य गीत लिखे । डॉ. चक्रधर नलिन के अनुरूप श्रेष्ठ शिशु गीत- 'अच्छा शिशु गीति-काव्य प्रवाहपूर्ण, लयात्मक, रागात्मक और बोधगम्य होता है, संवाद, अभिनय, वर्णनात्मक, कथा तथा पद्य, लोक और अनुरंजन, शिशु काव्य की विशेषतायें हैं। "सूर्य कुमार पांडेय का एक सुन्दर शिशु गीत , जिसमें बालकों का क्रिकेट के प्रति विशेष अनुराग व्यक्त हुआ है-

माँ, मैं भी अब सचिन बनूँगा

मुझे गेंद बल्ला दिलवा दो

पेंट-शर्ट सुन्दर सिलवा दो जूते और पैड संग ला दो

हेलमेट मेरे लिए मंगा दो

मैं दिनभर जमकर खेलूँगा।"

इस युग के प्रमुख बाल साहित्यकार , गीतकार शम्भूदयाल श्रीवास्तव , नारायणलालपरमार, स्वर्ण सहोदय , हरिकृष्णदेवसरे, दामोदर अग्रवाल, जय प्रकाश भारती, श्रीप्रसाद, चन्द्रपाल सिंह 'मयंक', विनोदचन्द्रपाण्डेय, निरंकार

© **Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)**
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

देव सेवक, विष्णुकांतपाण्डेय, सोहनलालद्विवेदी, योगेन्द्र कुमार 'लल्ला, मोहन लाल गुप्त , ठाकुर दत्त शर्मा , श्रीकृष्ण चन्द्र तिवारी "राष्ट्रबंधुशिवचन्द्र सागर, सीताराम गुप्त हैं। नई पीढ़ी का उत्साहवर्द्धन करने तथा प्रेरणा देने के लिए उत्तर - स्वतंत्रता युग में विष्णु प्रभाकर, रामधारी सिंह दिनकर हरिवंशराय बच्चन', मैथिलीशरण गुप्त, कमलेश्वर ऐसे अनेक बड़े साहित्यकारों ने सामान्य साहित्य के साथ ही बाल साहित्य की रचना करके बाल साहित्य के भण्डार में श्रीवृद्धि की। इसी प्रकार निरंकार देव 'सेवक', चन्द्रपाल सिंह मयंक , राष्ट्रबंधु, योगेश कुमार लल्ला , श्रीप्रसाद, रामवचन सिंह 'आनन्द', शोभनाथ लाला के अतुलनीय योगदान के लिए हिन्दी बाल साहित्य इन बाल साहित्यकारों का चिरऋणी रहेगा। बाल गीतों की भांति स्वतंत्रता के उत्तर युग में कहानी अधिक मौलिक , प्रगतिशील, संवेदनात्मक और यथार्थवादी हो गई। नए प्रतिमान स्थापित हुए। डॉ. हरिकृष्णदेवसरे ने इस युग की कहानी को परिभाषित किया है — सांतवें और आठवें दशक में बालकथा - साहित्य में कई प्रयोग भी हुए। नई परीकथाएँ लिखी गई , मुहावरों पर आधारित कहानियाँ इंटरव्यू शैली में लिखी गई कहानियाँ , पंचतंत्र - शैली में नई कहानियाँ लिखी गई। इस अवधि में जिन लेखकों ने बालकथा-साहित्य को आगे बढ़ाया उनके अपने रचना- -सिद्धांत और वैचारिक पक्ष भी थे। विष्णु प्रभाकर ने बच्चों के लिए आधुनिक संदर्भ में पौराणिक नीतिपरक और शिक्षाप्रद कथाएँ लिखीं , साथ ही नए भावबोध की कहानियाँ भी लिखीं। श्री व्यथित हृदय ने अपनी कहानियों में राष्ट्रीयता , ईमानदारी, साहस और भारतीय आदर्शों के प्रति आग्रह प्रस्तुत किया किन्तु रचनाओं में पिष्टपोषण बहुत हुआ हरिकृष्णदेवसरे ने अपनी कहानियों में बच्चों को उनकी समस्याओं और परिवेश से जोड़ा। इस प्रकार से आज का बालकथा-साहित्य अपने नए स्वरूप में बच्चों के लिए अधिक प्रभावशाली और पठनीय बन गया है। "बाल नाटकों और उपन्यासों में भी नया मोड़ आया। इस के पूर्व बालोपयोगी नाटकों की कमी को दूर करने के लिए इस अवधि में रंगमंच निर्देश , बालोपयोगी भाषा-शिल्प, संवाद, सहज अभिनीत होने वाले नाटकों की रचना की। बच्चों की अपने समस्याओं , सामाजिक परिस्थितियों और बदलते समाज की स्थितियों पर आधारित विषयों पर लिखे गए एकांकियों का संग्रह प्रतिष्ठित बाल एकांकी सम्पादन श्रीकृष्ण और योगेन्द्र कुमार लल्ला ने बाईस एकांकी प्रस्तुत किये। यह उल्लेखनीय प्रकाशन था। बच्चों के उपन्यासों का अपना विशिष्ट महत्व इसलिए है कि बच्चे साहसिक , रोमांचक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक विषयों पर लिखी कहानियाँ पढ़ने में अधिक रुचि लेते हैं। बाल उपन्यास उन्हें पूरा मनोरंजन और संतोष देते हैं। बालकों की कल्पना, जिज्ञासा और मनोरंजन से भरपूर, सहज सरल भाषा-शैली में सामाजिक, ऐतिहासिक मनोवैज्ञानिक, वैज्ञानिक और साहसिक वृत्ति जाग्रत करने वाले उपन्यासों की रचना हुई। स्वातंत्र्योत्तर बाल साहित्य में सन् 1990 में अभूतपूर्व क्रांतिकारी बदलाव आया। इस युग में बाल साहित्य के भाव पक्ष और शिल्प में नए-नए प्रयोग हुए। डॉ. परशुराम शुक्ल ने इस युग को प्रयोगवादी युग से नामांकित किया है। प्रयोगवादी बाल साहित्य की अपनी विशेषतायें हैं जो किसी अन्य युग में देखने को नहीं मिलती। इसमें वैज्ञानिक बाल साहित्य अथवा सूचनात्मक बाल साहित्य प्रमुख हैं। *

यह युग प्रौद्योगिकी, सूचना एवं संचार क्रांति, तकनीक, पर्यावरण, मोबाइल, इण्टरनेट का है इसीलिए बाल रचनाकारों ने बच्चों की असीम कल्पनाओं , नवीनता के प्रति आग्रह को देखते हुए उन्हें जीवनोपयोगी ज्ञान देने और यथार्थ से परिचित करवाने के लिए विज्ञान जैसे जटिल विषय पर बहुत प्रवीणता के साथ रोचक , मनोरंजक, सरस, सहज बालोपयोगी कविता, कहानी, निबंध, उपन्यास, नाटक, लिखे इस काल खण्ड में भारत सरकार ने नेशनल चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया नई दिल्ली संस्था की स्थापना की यह संस्था बाल साहित्य के प्रकाशन के साथ-साथ श्रेष्ठ बाल साहित्यकारों को प्रोत्साहित करने के लिए सम्मानित एवं पुरस्कृत भी करती है। इसी समय बाल साहित्य पर शोध के

नए द्वार खुले। कई विश्वविद्यालयों ने बाल साहित्य पर विद्यार्थियों को शोध करने की अनुमति प्रदान की और उन्हें पीएच.डी. की डिग्री से अलंकृत किया। बाल साहित्य में अभी तक सौ से अधिक शोध सम्पन्न हो चुके हैं। सन 1968 में बाल साहित्य पर प्रथम शोध करने का गौरव डॉ. हरिकृष्णदेवसरे को मिला। सुरेनअग्रवाल , जगदीश चन्द्र अग्रवाल, जगदीश लाल द्वारा 1972 में रचित हिन्दी में बाल साहित्य की पुस्तक दो खण्डों में प्रकाशित हुई , जिसमें लगभग चार हजार बाल साहित्य की पुस्तकों का विवरण है यह पुस्तक नेशनल चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट के द्वारा बाल साहित्य ग्रंथ विवरण पुस्तिका के अभाव की बात को लेकर ही लिखी गई है।

भारत सरकार ने 1948 में 'बालभारती नामक प्रथम बाल पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। तत्पश्चात् एक के बाद उत्तम बाल पत्रिकाओं के प्रकाशन का सिलसिला चल पड़ा। इनपत्रिकाओं ने बाल साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। नंदन ', बालहँस', 'लोटपोट', 'चन्दा मामा', 'चंपक', 'पराग' देवपुत्र', 'नन्हे सम्राट, बाल साहित्य समीक्षा, बालवाणी, अवाडबवझड, बच्चों का देश, मेला, सुमन सौरभ, निडर, मधु मुस्कान, चकमक बाल बिगुल, इन्द्र धनुष, बाल मेला, नौनिहाल, बाल प्रहरी, बालवाटिका, बाल प्रतिभा आदि पत्रिकाओं के माध्यम से बालकों को अपनी पसंद की कविता, गीत, निबन्ध, बाल पहेली, कहानी, चित्र कथायें आदि उपलब्ध हुई। आज भी ये पत्रिकायें उत्कृष्ट बाल साहित्य को बालकों तक पहुँचा कर उन्हें आनन्दित कर रही हैं। देश के शीर्षस्थ समाचार पत्र भी बाल साहित्य को घर-घर तक ले जाने में अग्रणी रहे हैं। साप्ताहिक हिन्दुस्तान , नवभारतटाइम्स, पंजाब केसरी, राजस्थान पत्रिका दैनिक नवज्योतिराष्ट्रदूत, दैनिक ट्रिब्यून नई दुनिया, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, अमर उजाला, राष्ट्रीय सहारा, इतवारी पत्रिका, लोकमत, सहारा समय, अमर उजाला आदि में बालकों के लिए विशेष स्तम्भ प्रकाशित होते रहे, साप्ताहिक परिशिष्टों में बाल साहित्य की सभी विधाओं को स्थान दिया जाता है , कुछ पत्र तो एक-दो पृष्ठ बाल साहित्य देते रहे हैं। दैनिक नवज्योति में आज भी रविवारीय परिशिष्ट में दो पेज बालकों के लिए निर्धारित है। राष्ट्रदूत की रविवारीय'राष्ट्रदूत' मैगजीन बरसों से बाल साहित्य को प्रकाशित करके अति अभिनंदनीय कार्य कर रही है। देश का प्रथम पाक्षिक बाल अखबार 'टाबर टोली, नवम्बर 2003 से सम्पूर्ण रूप से बालकों को समर्पित हैं। बालकों के पसंद की हर प्रकार की सामग्री को इसमें प्रकाशित स्थान दिया जाता है। इसके मानदसम्पादक बाल साहित्यकार दीन दयाल शर्मा हैं। आधुनिक काल टीवी , संचार, इण्टरनेट, मोबाइल, चलचित्रों एवं कार्टून फिल्मों का है। बाल साहित्य को ऊँचाईयाँ प्रदान करने तथा घर-घर तक पहुँचाने में कार्टून फिल्मों की उल्लेखनीय भूमिका सर्वमान्य है एवं आज का सबसे सशक्त माध्यम है। इनके माध्यम से रोचकता और मनोरंजन के साथ बड़ी सहजता से अपनी संस्कृति , पौराणिक कथाओं, पौराणिक पात्रों से बालकों को परिचित करवाने में इनका महत योगदान सराहनीय है। इन कार्टून फिल्मों में डकटेल्स', 'अलादीन', 'ही मेन', 'मिकीमाउस', 'टॉमएण्डजैरीनिन्ज्याहतौड़ी', 'डोनाल्डडक बाल गणेश मायफ्रेन्ड गणेश', 'हनुमान', . 'बाल हनुमान', 'चाचा चौधरी 'हनुमान रिटर्न आदि प्रमुख हैं। इसी के साथ वर्तमान में प्रसारित हो रहे 'छोटा भीम सिंगमरिटर्नकार्टून धारावाहिक हिंसा और मारधाड़ वाले हैं, 'डोरेमोन जो बालकों का अत्यंत पसंदीदा धारावाहिक है, उसमें भी सकारात्मक सन्देश नहीं है , जो बालकों के लिए अपेक्षित है। निर्माताओं को चाहिए की कोमल कान्त बाल गोपाल के लिए ऐसे सीरियल ही बनाएं जो बच्चों का स्वस्थ मनोरंजन करे एवं नैतिकता का सबक भी दे दे।

स्वातंत्र्योत्तर युग के बाल साहित्य में राजस्थान के बाल साहित्यकारों का अवधान रेखांकित करने योग्य है। इनमें प्रख्यात बाल साहित्यकार शम्भूदयाल शर्मा सक्सेना को राजस्थान का प्रथम प्रमुख बाल साहित्यकार होने का गौरव

प्राप्त है। इनकी बाल साहित्य की अनेक कृतियाँप्रकाशित हैं। जिनमें नाचो गाओ , वीर संतान, फूलों के गीत, भालू की हार, बाल कवितावली आदि मुख्य हैं। राजस्थान साहित्य अकादमी इनके नाम से प्रति वर्ष पुरस्कार भी प्रदान करती हैं। इनके अतिरिक्त मूर्धन्य बाल साहित्यकार जगदीश चन्द्र शर्मा (गिलूण्ड) जाना-माना नाम है। इनकी भी बाल साहित्य की कई पुस्तकें छप चुकी हैं। पत्र-पत्रिकाओं में हजारों रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी हैं और यह सिलसिला आज भी जारी है। अन्य नामों में बद्रीप्रसादपंचौली , यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र , श्याम मनोहर व्यास , दीनदयाल शर्मा , डॉ. भगवती लाल व्यास, हरिवल्लभ बोहरा हरि डॉ. भैरूलालगर्ग , गोविन्द शर्मा , अनुपम परदेशी , शिवचरणसेन शिवा दिनेश विजयवर्गीय, अरनीरोबर्ट्स प्रमुख हैं। श्यामसुन्दरजोशी, सत्यनारायण सत्य सावित्री परमार, प्रमोद जोशी, कृपा m शंकर शर्मा, अचूक' पूरन सरमाहरदर्शनसहगल शिव मृदुल, तारादत्त निर्विरोध, राम सेवक शर्मा आदि नाम अग्रणी हैं। इस युग में राजस्थान के अतिरिक्त सम्पूर्ण देश के बाल रचनाकारों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। बाल चित्र कथाओं के रचनाकारों में अनंत कुशवाहा चाँद मोहम्मदघोसी , टीकारामसिप्पी आदि। कतिपय रचनाकारों के नाम और उनकी प्रमुख कृतियाँ इस प्रकार हैं-

दिविक रमेश कबूतरों की रेल तस्वीर और मुन्ना, बंदर मामा एक सौ एक बाल कवितायें, प्रकाश मनु : दही बड़े', 'चलो शिमाला आज सवेरे , चिड़िया रानी कितनी देर हुई है , पापा, तंग करता है भैया , हिन्दी बाल साहित्य का इतिहास जानकीपुर की रामलीला, रेणु चौहान रंग बिरंगे बादल , सूर्य कुमार पाण्डेय खिले फूल चूहे राजा गीत तुम्हारे मेरी प्रिय बाल कवितायें , अक्कड़-बक्कड़, हम हैं किससे कम , रामनिवास मानव मिल कर साथ चलें , 'कबूतर' डॉ. नागेशपाण्डेय'संजय' जो बूझे वह चतुर सुजान ', 'चल मेरे घोड़े', 'अपलम-चपलम', 'मोती झरे टपटप', 'आधुनिक बाल कहानियाँ'यदि ऐसा हो जाए , 'छोटे मास्टरजी, पीठ पर बस्ता , रोहिताश्वअस्थाना'नन्हीं गजलें, 'मोनू के गीत ', 'भूत से टक्कर, जहीरकुरेशी उगते सूरज , तुम्हें सलाम' घमण्डी लाल अग्रवाल 'बाल कवितावली', बाल गीतावली, भगवती प्रसाद द्विवेदी'नन्हे गीत मेरी प्रिय बाल कवितायें ', 'ठोलागुरू, 'समय का मोल', 'अनोखा गुड़सवारगोविन्द शर्मा 'चींची ने किया कमाल , 'मेहनत का मन्त्र ', 'दोस्ती का रंग ', 'सच्चे दोस्त' 'हीरा मिल गया ', 'नया बाल दिवस , उषा यादव तस्वीर के रंग, अखिलेश चमन श्रीवास्तव खीर का पेड', 'बहादूरटीपू'गुल्लक', श्रीनिवास मिश्र 'अनोखा फल'.. बगिया के फूल', 'लाल फूल, अनुपम प्रेरक कथायें, जगदीश चन्द्र शर्मा, पद्य प्रसंग, नेहरू के संग.. दर्शन सिंह आहट 'पवित्र कार्य, साबिर हुसैन 'नुपूर नक्षत्र ', 'जामुन का पेड़ , मनोहर पुरी सात बाल कहानियाँ जंगल के दोस्त ' गीतिकागोयल'चुनमुन की कहानियाँ, भालू का बच्चा', 'नाव चली विमला भण्डारीप्रेरणास्पद बाल कहानियाँ, अलका पाठक 'नटखट बाबू, नीलम राकेश 'अनोखी छुट्टियाँ, मनोहर श्याम जोशी 'आओ करें चाँद की सैर , सत्य प्रकाश अग्रवालएक डर, पांच निडर मस्तराम कपूर 'भूतनाथ' आनन्द प्रकाश जैन 'सांवरीसलौनी, प्रताप सहगलः 'दो बाल नाटक', 'दस बाल नाटक ', रमेश चन्द्र पन्त एक सौ एक बाल कवितायें , शेषपाल सिंह 'गुल्लक, सजा, राजनारायण चौधरी पराग अगडम-बगड़म', 'ना-ना, देवेन्द्र कुमार 'इक्कवान बाल गीत', 'एक सौ एक बाल गीत , हंसने का स्कूल', 'बिस्तर छोड़', 'मीठा बोल', योगेन्द्र सिंह भाटी'बच्चों की दुनिया', 'जंगल में मंगल, अखिलेश श्रीवास्तव चमन एक पते की बात, उषा यादव 'इक्कवान बाल कवितायें, 'मम्मी की साड़ी, शकुन्तला कालरा : 'फुलवारी', 'मुनिया करे तमाशा डॉ. रवि शर्मा मधुप में ऐसा ही हूँ , डॉ. सूरज मृदुल : 'बचपन की परख, डॉ. राजेन्द्रपंजियार सूरज का गुस्सा , शिवराज भारतीय माँ, सुशीला शर्मा 'रंग बिरंगी बच्चों की दुनिया, कुसुम अग्रवाल अंत भले का भला, अलका अग्रवाल : 'जब खिलौने रूठ गये , सुकीर्ति भटनागरपाहे वाली दादी , कृष्णा कुमारी जंगल में फाग , ओम शरण आर्य 'चंचल' 'अच्छे

बच्चे जयसिंहआशावत 'गौरया ने घर बनाया , महेश चन्द्र त्रिपाठी जंगल में मंगल ', 'हम चौकन्ने ', चाँद मोहम्मदघोसी'आओ बनाऐ अंक चित्र ', 'बुद्धि की परख सुरेश चन्द्र सर्वहारा : फूलों सा महके बचपन शिवराज श्रीवास्तव फूल चिड़िया और मेरा देश' आदि ।

इस युग के राष्ट्रीय स्तर के जाने माने बाल साहित्यकारों ने निरंकारदेव सेवक , डॉ. श्रीप्रसाद , डॉ. राष्ट्रबंधु , शंकुतलासिरोठिया, डॉ. हरिकृष्णदेवसरे, बाल मुकुंद गुप्त, हरिवंश राय बच्चन, रमापति शुक्ला, भगवती प्रसाद द्विवेदी, डॉ. शोभनाथ लाल , पं. सोहन लाल द्विवेदी , योगेश कुमार 'लल्ला, डॉ. शेरजंगगर्ग, चक्रधर नलिन डॉ. देवेन्द्र दत्त तिवारी, सुदर्शनाचार्य, नरेशचन्द्र सक्सेना, सूर्यकुमारपाण्डेय, डॉ. उषा यादव, अमृतलाल नागर, विष्णु प्रभाकर, प्रयाग शुक्ल, भवानी प्रसाद मिश्र , बाल स्वरूप 'राही, डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल , विनोदचन्द्रपाण्डेय, भालचन्द्रसेठिया, ओमप्रकाश कश्यप, सुरेन्द्र विक्रम, महेश चन्द्र त्रिपाठी, कृष्ण शलभ, अमृता शुक्ला, अजय जनमेजय, यश मालवीय, विजय कुमार मानव अमरनाथ श्रीवास्तव, अशोक रंजन सक्सेना, आरसी प्रसाद सिंह, रघुवीर शरण मिश्र, शम्भुदयाल सक्सेना, रोहिताश्वअस्थाना, सरोजिनी कुलश्रेष्ठ , शोभनाथ लाल , विनयकुमार मानवीय प्रकाश मनु , अनामिका रिछारिया, अनिल द्विवेदी 'तपन', डॉ. दिविक रमेश , सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला , यादरामरसेन्द्र, योगेन्द्र दत्त शर्मा , सरोजनीअग्रवाल, रामवचन सिंह आनन्द , डॉ. वेद प्रकाश , जय प्रकाश भारती , सर्वेश्वर दयाल सक्सेना , नागार्जुन, दामोदर अग्रवाल, राजेन्द्रअवस्थी, नरेन्द्रकोहली, सीताराम गुप्त, नवीन जैन, शीला गुजराल, रामानुज त्रिपाठी, राम निरंजन शर्मा 'ठिमाऊ', मनोहर वर्मा, आचार्य अज्ञात, जगदीश चन्द्र शर्मा, अनन्तकुशवाहा, यादवेन्द्र शर्मा चन्द्र, डॉ. परशुराम शुक्ल , रमेश तैलंग , देवेन्द्र कुमार , डॉ. शकुंतला कालरा , डॉ. जाकिर हुसैन , भारत भूषण अग्रवाल , लक्ष्मीशंकरबाजपेई, कन्हैया लाल नंदन, प्रकाश मनु भगवती प्रसाद द्विवेदी, राम सागर सदन, शम्भू प्रसाद श्रीवास्तव, डॉ. सुरेन्द्र विक्रम, कमलेश सक्सेना, मधु भारतीय, उमा सूद, डॉ. नागेशपाण्डेय, घमण्डीलालअग्रवाल, बालकृष्णगर्ग, कृष्ण विनायक फडके , जाकिर अली 'रजनीश ओमप्रकाश कश्यप , दिनेश पाठक 'शशि', गोपी चन्द्र श्रीनागर , हरदर्शनसहगल, सावित्री परमार, दीनदयाल शर्मा, सरोजनी प्रीतम, इंदिरा परमार, स्नेहलता प्रसाद, अरनीराबर्ट्स, सुधीर सक्सेना 'सुधि', विष्णुकांतपाण्डे, रत्न प्रकाश शील , दुर्गाप्रसाद शुक्ल आजाद , जाकिर अली, राम नरेश त्रिपाठी , आनन्द प्रकाश जैन , रामसेवक शर्मा, सत्यदेवसवितेन्द्र, गोविन्द शर्मा, गोकुलचंदपढ़हारटीकारामसिप्पी, प्रभात गुप्त, आनन्द विश्वास, विनोद बब्बरमोहम्मदअरशद खान, कमला चमोला, भगवती लाल व्यास, आनन्द प्रकाश त्रिपाठी रत्नेश शिव मृदुल, अश्वघोष, मालती शर्मा, उदयकिरौला, सत्यनारायण'सत्य', मंजुरानी जैन, प्रहलादश्रीमाली, शादाब आलम, कृष्ण कुमार यादव, भगवती प्रसाद गौतम, शैलेश मटियानी, जितेन्द्र शंकर बजाड़, अनिल चौधरी, मनोहर सिंह राठौर, मनमोहन अभिलाषी, पवन कुमार शर्मा, नरेन्द्र मस्ताना, राजेन्द्र परदेसी, शिवचरणसेन शिवा, राकेश नैया, शशि गोयल, इन्द्रा रानी, डॉ. प्रत्युषगुलेरी, पुरुषोत्तम यकीन देवदत्त शर्मा , संगीतासेठी, सुनीता रावत, पद्मा पंचौली आदि प्रमुख हैं।

सार स्वरूप कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के पश्चात् बाल साहित्य के विकास में अभूतपूर्व उन्नति हुई। नवीन चेतना , नई स्फूर्ति, उत्साह के नित नये आयाम स्थापित होने लगे । राजनैतिक स्वतंत्रता के साथ विज्ञान एवं तकनीकी के क्षेत्र में नूतन क्रांति का सूत्रपात होने से बाल साहित्य में नए विचार , नई अवधारणायें, नया चिंतन नए स्वर मुखरित हुए। इस समय बालकों की रुचि के अनुरूप रोचक , मनोरंजक सरल, सहज, साहित्य की सर्जना हुई। बालक कल्पना लोक से

निकल कर यथार्थ के धरातल से परिचित हुए। बाल कविताओं व कहानियों से इतर अन्यान्य विधाओं में यथा बाल नाटक, बाल उपन्यास, बाल निबन्ध, बाल यात्रा वृत्तांत की भी रचना प्रारम्भ हुई, जो उल्लेखनीय कही जा सकती है।

इसी के साथ-साथ बाल साहित्य की पुस्तकों का प्रकाशन भी प्रारम्भ हुआ जिसमें सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं का बहुत योगदान रहा। स्वातंत्र्योत्तर काल में बच्चों और किशोरों के चारित्रिक , नैतिक व समग्र व्यक्तिव निर्माण की दृष्टि से भी बाल साहित्य सृजन हुआ जो उल्लेखनीय रहा। बाल गीतों में सरसता , माधुर्य का संचार होने लगा , बाल उपन्यासों एवं नाटकों में नित नवीन रंग भरे जाने लगे। इस प्रकार बाल साहित्य अधिक प्रभावशाली , रोचक, जीवनोपयोगी और पठनीय बन गया। इस दौर में बाल साहित्य के उन्नयन में बाल पत्रिकाओं की भूमिका अवर्णनीय रही। सभी पत्र-पत्रिकाओं में बाल साहित्य का प्रकाशन होने लगा, जिससे यह साहित्य घर-घर तक पहुँचने से बच्चों के लिए सुलभ हो सका। इस यज्ञ में बड़े-बड़े साहित्यकारों ने आहुति देकर बाल साहित्य में उल्लेखनीय योगदान दिया , जिसकी जितनी प्रशंसा की जाये अल्प होगी।